● **पढ़ो और गाओ :**

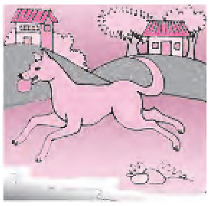

२. लालची कुत्ता

एक कुत्ता जो बहुत लालची,
भाग चला लेकर रोटी,
पड़ी रास्ते में उसके इक,
नदी बहुत जो थी छोटी ।
जाने को उस पार नदी के,
रखा था पतला पटरा,
सँभल-सँभलकर चलना पड़ता,
वरना था पूरा खतरा ।
पानी में देखा इक कुत्ता,
उसके जैसा था जो दीखता,

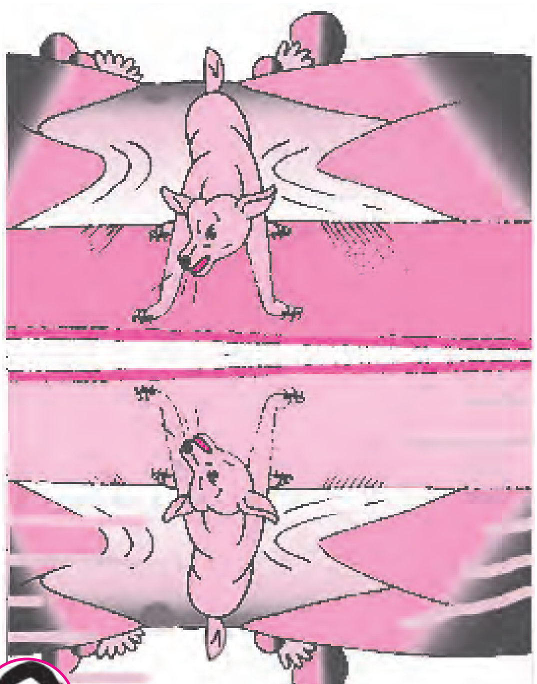

उसके जैसी मुँह में रोटी,
दीख रही थी मोटी-मोटी ।
कैसे रोटी उसकी पाऊँ,
उसका हिस्सा भी हथियाऊँ ?
भौंका सोच बेभानी में,
रोटी जा गिरी पानी में ।
भौंचक्का-सा लगा देखने;
खड़ा रहा मुँहबाय,
बच्चो ! इसको कभी न भूलो;
लालच बुरी बलाय ।

-प्रभाकर भट्ट

K7655L

पढ़ो और विरामचिह्नों को समझो :

पूर्णविराम (।),अल्पविराम (,), प्रश्नवाचक (?), विस्मयादिबोधक (!), अर्धविराम (;)

१. नदी बहुत जो थी छोटी ।
२. उसका हिस्सा भी हथियाऊँ ?
३. भौंचक्का-सा लगा देखने; खड़ा रहा मुँहबाय,
४. बच्चो ! इसको कभी न भूलो; लालच बुरी बलाय ।

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह एवं लय-ताल के साथ कविता का मुखर वाचन करें । विद्यार्थियों को ध्यान से सुनने के लिए कहें । सामूहिक, गुट एवं एकल रूप में अनुवाचन कराएँ । उनसे लालच जगाने वाली वस्तुओं के नाम कहलवाएँ । अन्य गीत गवाएँ ।